कई मर्ज़ की एक दवा: गुग्गुल "*कोम्मीफोरा विगटाई अर्न.*"

विशेषतायें एवं लाभ:

- गुग्गुल के पौधे से प्राप्त गोंद का औषधीय महत्व है। यह रक्त शोधक, रक्तकण व श्वेतकण वर्धक व यकृत उत्तेजक होता है।
- गुग्गुल का उपयोग वातरक्त, आमवात, व्रणशोथ, नाड़ीव्रण, कुष्ठ, मूत्रकृच्छ, नेत्ररोग, हृदयरोग, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, पाण्डूरोग, उदर रोग आदि में किया जा सकता है।
- यह वसा व पित्त के उपापचय के कारण उत्पन्न होने वाले हृदयरोगों को दूर करने में भी श्रेष्ठ है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

- गुग्गुल के कृषिकरण के लिए चिकनी मिट्टी उपयुक्त होती है।

भूमि की तैयारी:

- भूमि तैयार करने के लिए खेतों को 2-3 बार जोत कर कुछ समय के लिए खाली छोड़ दिया जाता है।
- गोबर की खाद 25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से मिलायी जाती है एवं खेत को पुन: कुछ समय के लिए खाली छोड़ दिया जाता है।

प्रवर्धन:

- गुग्गुल का प्रवर्धन बीज, कटिंग एवं एयर लेयरिंग विधि द्वारा किया जाता है।
- बीजों में अंकुरण क्षमता कम होती है अत: अंकुरण क्षमता वाले बीजों को पानी में तैराकर चयनित किया जाता है। जो बीज पानी में डूब जाते हैं उन्ही को नर्सरी में बोया जाता है।
- कटिंग द्वारा प्रवर्धन की प्रकिया जनवरी-फरवरी में अपनाई जाती है।
- 1.5-2.0 सें.मी. की मोटाई वाली कटिंग को चयनित कर पौलीबैग में लगाया जाता है एवं हल्की सिंचाई की जाती है।
- जुलाई-अगस्त में कटिंग को खेत में स्थानांतरित कर दिया जाता है।
- एयर लेयरिंग की विधि बरसात के मौसम में अपनाई जाती है।

पौधरोपण:

- तैयार खेत में उपयुक्त आकार के गडढ़े बनाए जाते हैं।
- तैयार पौधों को 2 x 2 मीटर की दूरी पर बरसात के मौसम में लगाया जाता है।
- पौध रोपण के पहले दीमक उपचार हेतु 100 ग्राम नीम की खली का चूरा हर गड्ढ़े में डालना चाहिए।
- प्रति हेक्टेयर 2500 पौधे लगाए जा सकते हैं।

खरपतवार नियंत्रण:

- प्रत्येक सिंचाई के उपरांत अवांछनीय खरपतवार को खेत में बने गड्ढ़ों से हटाते रहना चाहिए।

सिंचाई:

- प्रथम सिंचाई, पौधरोपण के तुरंत बाद करनी चाहिए एवं इसके पश्चात् आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई करनी चाहिए।
- सिंचाई की आवश्यकता पौध रोपण के पश्चात् 2-3 वर्ष तक रहती है।

आय:

- पौधे से प्राप्त होने वाला गोंद ही इसका प्रमुख उत्पाद है।
- गोंद प्राप्ति हेतु तेज चाकू से मुख्य तने की छाल की मोटाई तक गहरा चीरा लगाया जाता है।
- पौधे में विद्यमान गुग्गुल रिसकर बाहर निकलता है।
- यह कार्य नवंम्बर एवं अप्रैल माह के मध्य किया जाता है।
- 20-25 दिनों के अंतराल से गोंद एकत्रित कर लिया जाता है।
- गोंद को साल्वेन्ट विधि द्वारा भी एकत्र किया जा सकता है।
- प्रत्येक पौधे से आठ वर्ष पश्चात् 500-800 ग्राम गोंद प्राप्त होती है जिसका मूल्य 200-300 रूपये प्रति किलो है।

संकलन:

डॉ. डी.के. मिश्रा

वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान

कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005